इकाई 10 घनानंद का काव्य

इकाई की रूपरेखा

10.0 उददेश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 युगीन परिवेश जीवन परिचय और रचनाएँ

10.3 घनानंद की कविता में प्रेम, सौंदर्य और शृंगार

10.4 घनानंद के काव्य में लोक जीवन और भक्ति भावना

10.5 घनानंद की कविता का शिल्प पक्ष : काव्य भाषा, छंद और अलंकार

10.6 घनानंद की कविता का वाचन और आस्वादन

10.7 सारांश

10.8 शब्दावली

10.9 उपयोगी पुस्तकें

10.10 बोध पश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि घनानंद के काव्य के बारे में जानकारी दी जा रही है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- घनानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझ सकेंगे;

- रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में घनानंद के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- घनानंद की स्वच्छंद प्रेम योजना और उनकी सौंदर्य अभिव्यक्ति को समझ सकेंगे;
- घनानंद के काव्य में व्यक्त लोक जीवन और भक्ति भावना को जान सकेंगे; तथा
- घनानंद के काव्य के शिल्पपक्ष की विशेषताएँ बता सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल कहा गया है। रीतिकाल का समय 1650 ई. से 1857 ई. है। शास्त्रीय काव्य लक्षणों– रस, अलंकार, ध्वनि, नायक-नायिका भेद के आधार पर काव्य-सृजन के कारण इस काव्यधारा को रीतिकाव्य कहा गया। रीतिकाव्य में काव्यशास्त्र की रीति के आधार पर ही काव्य-सृजन नहीं हुआ, उससे मुक्त होकर भी काव्य रचा गया। ऐसी काव्यधारा ही 'रीतिमुक्त' है। यह काव्यशास्त्र की बँधी-बँधाई परिपाटी से मुक्त स्वछंद प्रवृत्ति का काव्य है। इस काव्य धारा के कवियों में घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर तथा द्विजदेव का नाम लिया जाता है। इस काव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि घनानंद हैं। घनानंद की कविता में रीतियुगीन जड़ काव्यशास्त्र आधारित कविता का विरोध है। युगीन रूढ़िवादी सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति भी उनकी कविता में गहरा प्रतिरोध है। वह स्वच्छंद प्रेम के आग्रही कवि हैं। प्रेम घनानंद की कविता का केंद्रीय विषय है। स्वच्छंद प्रेम के इसी रूप में श्रृंगार और सौंदर्य की संवेदना भी अंतर्भुक्त है। प्रेम की स्वच्छंद अभिव्यक्ति विरह की श्रृंगारिक कविता में रूपायित होती है। प्रेम की आत्मानुभूति को कविता में रचने वाले घनानंद ने जीवन और कविता को अलग नहीं माना। उनके जीवन की अनुभूति ही कविता की अनुभूति है। उन्होंने लिखा भी है, 'मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।' स्वानुभूति चेतना के कवि घनानंद की

कविता में सूफी प्रेमाख्यानक परंपरा का गहरा असर है। कवित्त, सवैय्या और कुंडलिया जैसे काव्यरूपों में घनानंद ने सर्जनात्मक काव्यभाषा का प्रयोग किया है। काव्यभाषा प्रयोग में भी घनानंद ने स्वच्छंद काव्य संवेदना का निरूपण किया है। इसी रूप में वह रीतिमुक्त स्वच्छंद काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं।

10.2 युगीन परिवेश : जीवन परिचय और रचनाएँ

रीतिकाल पतनशील सामंती समाज की देन है। युगीन दरबारी संस्कृति में श्रृंगारिकता का साहित्य अधिक लिखा गया। काव्यशास्त्रीय कसौटी को आधार बनाकर रस, अलंकार, नायिका भेद पर लिखे गए ग्रंथों में भी श्रृंगारिकता की प्रधानता थी। युगीन राजनीतिक परिवेश में भी इसी तरह के साहित्य-सृजन का अवकाश था। श्रृंगार के साथ भक्ति और वीरभाव की कविताएँ भी इस युग में रची गईं लेकिन उनमें पूर्ववर्ती काव्यधाराओं– आदिकाल और भक्तिकाल का ताप न था। युगीन परिवेश का असर घनानंद के काव्य पर भी पड़ा। श्रृंगारिकता उनके काव्य का प्रधान विषय बना। स्वच्छंद व्यक्तित्व और प्रेम की गहरी संवेदना के कारण वे युगीन रीतिकालीन श्रृंगारिक कविता का अतिक्रमण करते हैं। इसी रूप में वह स्वच्छंद प्रेम व्यंजना और रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि कहलाए। रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि राज्याश्रय में पलने वाले कवि नहीं थे। वे साधारण जन समाज से निकले हुए रचनाकार थे।

घनानंद का जन्म 1689 ई. में ब्रजक्षेत्र में हुआ। वे फारसी साहित्य के गंभीर अध्येता थे। दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के मीर मुंशी थे। वह मुहम्मदशाह 'रंगीले' के दरबार में कवि के रूप में नहीं बल्कि प्रतिष्ठित मीर मुंशी के रूप में थे। घनानंद कवित्व से अधिक उस दरबार में अपने गायन कला के लिए जाने जाते थे। उसी दरबार की सुजान नामक वेष्या से

अतिशय प्रेम करते थे। दरबार में घनानंद की प्रतिष्ठा के कारण कुछ कुचक्रियों ने उन्हें दरबार से बाहर निकालने के लिए एक कुचक्र रचा, जिसमें वे सफल भी हुए। दरबारियों ने राजा को बताया कि घनानंद बहुत अच्छा गाते हैं। राजा ने उन्हें गाने को कहा। उन्होंने गाने से मना कर दिया। दरबारियों ने राजा को बताया कि वह सुजान के कहने पर जरूर गाएँगे। सुजान को बुलाया गया। सुजान के अनुरोध पर घनानंद ने गाना गाया और गाते समय इतने भाव-विभोर हो गए कि मुँह सुजान की तरफ और पीठ राजा की तरफ कर लिया। इस अशिष्टता के कारण राजा ने घनानंद को दरबार से बाहर निकाल दिया। जाते समय घनानंद ने सुजान से साथ चलने का आग्रह किया लेकिन सुजान ने मना कर दिया। दुखी होकर घनानंद वृंदावन चले गए। वृंदावन में वह निंबार्क संप्रदाय में दीक्षित हुए और 'सखी भाव' के उपासक बनें। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार अहमदशाह अब्दाली के दूसरे आक्रमण के दौरान 1761 ई. में मथुरा में घनानंद की हत्या कर दी गई।

घनानंद के नाम पर भी विवाद है। कवि ने अपने नाम का विविध रूपों में प्रयोग किया है। घनानंद, आनंदघन और घनआनंद उनके प्रमुख नाम हैं। साहित्य में वह घनानंद और आनंदघन नाम से प्रसिद्ध हुए। घनानंद ने कुल कितनी रचनाएँ रची इस पर भी पर्याप्त विवाद है। आचार्य विष्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'घनानंद ग्रंथावली' में घनानंद की 39 कृतियों को संकलित किया है :

1.	सुजान हित	11. अनुभव चंद्रिका	21. कृष्ण कौमुदी	31. मुरतिकामोद
2.	कृपाकंद	12. रंग बधाई	22. धाम चमत्कार	32. मनोरथ मंजरी
3.	वियोगबेलि	13. प्रेम-पद्धति	23. प्रिया प्रसाद	33. छंदास्तक
4.	इश्कलता	14. वृषभानुपुर सुषमा वर्णन	24. वृंदावन मुद्रा	34. त्रिभंगी

5.	यमुनायश	15. गोकुल गीता	25. ब्रज स्वरूप	35. परमहंस वंशावली
6.	प्रीति पावस	16. नाम माधुरी	26. गोकुल चरित्र	36. ब्रज व्यवहार
7.	प्रेम पत्रिका	17. गिरिपूजन	27. प्रेम पहेली	37. गिरिगाथा
8.	प्रेम सरोवर	18. विचारसार	28. रसना यश	38. पदावली
9.	ब्रज-विलास	19. दानघाट	29. गोकुल विनोद	39. प्रकीर्णक (स्फुट)
10.	सरस बसंत	20. भावना प्रकाश	30. ब्रज प्रसाद	

प्रेम और भक्ति से संबंधित इन रचनाओं में 'सुजानहित', 'वियोगबेलि', 'इश्कलता', 'प्रेम-पत्रिका', 'दानघाट' तथा 'वृषभानुपुर सुषमा वर्णन' प्रमुख हैं। इन रचनाओं में उन्होंने कवित्त, सवैया, कुंडलिया और दोहे-चौपाई का प्रयोग किया है।

घनानंद अपने समय के विवादास्पद और स्वच्छंद व्यक्तित्व के प्रेमी कवि हैं। उनके काव्य की मूल प्रेरणा सुजान हैं। सुजान के वियोग ने उन्हें कवि बनाया। सामाजिक रीति-नीति का विरोध कर उन्होंने सुजान से प्रेम किया तो कविता की बनी-बनाई रीति-युगीन परिपाटी से अलग रीतिमुक्त काव्य संवेदना को ग्रहण किया। उनके समय में उनके निंदक भी थे तो प्रशंसक भी कम न थे।

आपके सौंदर्य की रीति अद्वितीय है। इसे जितनी बार देखा जाए नया ही लगता है। इसी प्रकार इन आँखों की। सहज वृत्ति भी अनौखीटै। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि ऐसी तृप्ति कहीं और नहीं मिलती।

ब्रजनाथ ने घनानंद की प्रशस्ति में इस पद को उद्धत किया है जिसमें घनानंद की काव्य-संवेदना की विरल अनुभूति का चित्रण किया गया है :

''जग की कविताई क धोखे रहैं, यां प्रबनिन की मति जाति जकी।

समुझै कबिता घनआनंद को, हिम आँखिन नेह की पीर तकी।।''

(काव्य संसार में प्रचलित काव्य–दृष्टि (रीतिबद्ध परम्परा) के धोखे में जो भावक घनानंद की कविता को समझने की चेष्टा करेगा, उसकी बुद्धि यह कविता न समझ पायेगी। घनानंद की कविता को वही भावक समझ सकता है जिसने 'प्रेम के पीर' को हृदय रूपी आँखों से देखा हो, भोगा हो।)

घनानंद के सामयिक मित्र ब्रजनाथ ने घनानंद की कविताओं को संगृहीत कर 'घनानंद कवित्त' में दर्ज किया है। इसमें लगभग 500 कवित्त-सवैये हैं। घनानंद की कविता में प्रेम और श्रृंगार के साथ भक्ति का भी विरल स्वर है। घनानंद के सुधी आलोचक रामदेव शुक्ल इस संदर्भ में लिखते हैं, ''रीतिकालीन काव्य को दूसरे दर्जे का साहित्य मानने वाले आलोचक भी घनानंद की जिस कविता के आधार पर उन्हें 'साक्षात रसमूर्ति' कहते हैं उसी काव्य को बकवास कहकर छोड़ देने वाले घनानंद का भक्तिकाव्य कितना समृद्ध है इसकी ओर अभी तक हिंदी साहित्य के विद्वानों का ध्यान नहीं जा सका है। 1057 पद तो केवल पदावली में ही हैं। इसके अतिरिक्त संप्रदाय की रीति-नीति के अनुसार घनानंद ने दर्जनों काव्यग्रंथों की रचना की है।''

10.3 घनानंद की कविता में प्रेम, सौंदर्य और श्रृंगार

घनानंद प्रेम मार्ग के 'धीर पथिक' हैं। भारतीय शास्त्रीय-सामाजिक परंपरा में एकतरफा प्रेम को स्वीकृति नहीं मिली है जबकि फारसी काव्य परंपरा में सूफी प्रभाव में प्रेम की इस पद्धति को प्रशंसित किया गया है। घनानंद का प्रेम एकतरफा ही है। सुजान के प्रति उनके प्रेम में विरह की उदात्त छवि है। घनानंद के प्रेम निरूपण में फारसी साहित्य का अत्यधिक प्रभाव

है। उनका प्रेम जो स्वच्छंद है, शास्त्रीय रूढ़ियों का प्रतिरोध करता दिखाई देता है। प्रेम में विरह की दशा को घनानंद ने एक नया उदात्त भाव लोक प्रदान किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल घनानंद की प्रेमदृष्टि की प्रशंसा करते हुए 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं, ''विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व ही है। ये वियोग श्रृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं। प्रेम का पीर, लेकर ही इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबादानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।''

घनानंद के स्वच्छंद प्रेम काव्य में अनुभूतिपरकता और भावुकता की प्रधानता है। घनानंद का प्रेम विरह परक है। उनकी कविता में उनकी प्रेमिका सुजान केंद्र में है। रीतिकालीन वासनापरक प्रेम से अलग प्रेम की प्रगाढ़ता और साधनाभाव घनानंद के प्रेम का विषय है। उनके अनुसार प्रेम का मार्ग सीधा और सरल है उसमें कपट और चतुराई की जगह नहीं है। सयानेपन की जरूरत नहीं है :

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।।

रीतिकाल में ही नहीं समूची हिंदी कविता में प्रेम निरूपण की जैसी संवेदना घनानंद की कविता में है वह विरल है। प्रिय की निष्ठुरता को जानते और पहचानते हुए भी उसके प्रति

उन्होनें एकनिष्ठ प्रेम भाव बनाए रखा तथा प्रेम को जीवन का मुख्य विषय मान लिया। प्रिय के प्रति घोर आसक्ति और तन्मयता इस प्रेम की संवेदना है। प्रिय की उपेक्षा और उससे उपजी पीड़ा को खुद सहना, प्रिय को दोषी न मानना बल्कि इस विरह को सहेजकर रखना, प्रिय की सदैव मंगल कामना करना, यह घनानंद के प्रेम की उदात्तता ही है :

इत बाँट परी सुधि, रावरे भूलनि कैंसे उराहनो दीजियै जू।

अब तौ सब सीस चढ़ाय लई, जु कहू मन भाई सु कीजियै जू।।

घनआनँद जीवन-प्रान सुजान तिहारियै बातनि जीजियै जू।

नित नीके रहौ तुम्हैं चाड़ कहा पै असीस हमारियौं लीजियै जू।।

घनानंद का प्रेम वासना रहित और निष्काम-प्रेम का अप्रतिम उदाहरण है। यह प्रेम का ऐसा मार्ग है जिसमें फकीराना अंदाज में बेलौस होकर ही चला जा सकता है। जैसे कि घनानंद चलते हैं। यह प्रेम की चरम दशा है जहाँ प्रेमी-प्रेमिका में फर्क नहीं रह गया है। वह दोनों एक हो गए हैं, अद्वैत हो गए हैं। आलोचक लल्लन राय 'घनानंद' पुस्तक में घनानंद के इस प्रेम तत्व का विवेचन करते हुए लिखते हैं, ''विषम होकर भी इनके प्रेम में अंततः एक समता की स्थिति मिलती है जो प्रेमी को बहुत बड़ा बना देती है। वस्तुतः यह सूफी प्रेमादर्श है जिसमें फारसी प्रेम की एकनिष्ठता और एकांतिकता सूफियों की पीड़ा, भारतीयता का आदर्श और भक्ति-भावना का सुंदर पुट मिलता है।'' प्रेम के इस स्वरूप पर घनानंद ने लिखा है :

प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै, बिचार,

बापुरो हहरि वार ही तें फिरि आयौ है।

ताही एक रस ह्वै बिबस अवगाहैं दोऊ,

नेहि हरि राधा जिन्हैं देखे सरसायौ है।

ताकी कोऊ तरल तरंग-संग छूट्यौ कन,

पूरि लोक लोकनि उमंगि उफनायौ है।

सोई घनआनंद सुजान लगि हेत होत,

ऐसें मथि मन पै सरूप ठहरायो है।।

घनानंद ने अपने लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम को रूपायित कर दिया है। सुजान के प्रति उनका प्रेम भौतिक प्रेम से इश्वरीय प्रेम में बदल गया। घनानंद के इस प्रेम में मध्यकालीन भक्ति की चेतना का तत्व भी निहित है।

घनानंद की कविता में सौंदर्य का सूक्ष्म अंकन हुआ है। उनका सौंदर्य चित्रण अपने युगीन कवियों से भिन्न और अनूठा है। आत्मानुभूति के ठोस धरातल पर वह सौंदर्य का पुनर्सृजन करते हैं। घनानंद की सौंदर्य दृष्टि से बाह्य सौंदर्य के साथ आंतरिक सौंदर्य की हवा भी उतनी ही गहराई से चित्रित हुई है। घनानंद के प्रशंसक ब्रजनाथ ने लिखा है :

नेहि महा ब्रजभाषा-प्रवीन औ सुंदरतानि के भेद कों जाने।

जोग बियोग की रीति मैं कोबिद भावना भेद सरूप कों ठानै।।

अर्थात घनानंद की कविता में व्यक्त सौंदर्य की सही परख वही कर सकता है जो खुद प्रेमी हो, ब्रजभाषा के मर्म को जानता हो, सुंदरता के भेदों की उसे परख हो। आत्मानुभूति और

भावना के भेदों की सूक्ष्मता को जानता हो। घनानंद के सौंदर्य चित्रण में स्वानुभूति की संवेदना है। घनानंद का प्रेमी आलंबन के रूप सौंदर्य में इस कदर घुल-मिल गया है कि दोनों एकमएक हो गए हैं। रूप सौंदर्य की आंतरिकता का चित्रण करते हुए नायिका के प्रति उनका भावुक प्रेमी मन तन्मय होकर अंतर सौंदर्य का उद्‌घाटन करता है :

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै।

घनानंद नायिका के सौंदर्य का वायवीय चित्रण नहीं करते। भोक्ता के रूप में अंकन करते हैं। बाह्य सौंदर्य के साथ मानसिक सौंदर्य का चित्रण करते हुए वह नई भावना और कल्पना को रूपायित करते हैं। रूप सौंदर्य का एक अनूठा उदाहरण :

झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छवै।

हँसि बोलन मैं छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।

लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।

अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै।।

यहाँ सौंदर्य का पारंपरिक रीतिकालीन सौंदर्य चित्रण नहीं है। कवि मुखमंडल, आँख, वाणी, लट, ग्रीवा के आकार-प्रकार का चित्रण करते हुए इनके सौंदर्य में निहित कांति और तेज का हृदय पर पड़ने वाले मनोहारी प्रभाव का अंकन करता है। अंतिम चरण का अंतिम पदबंध – 'परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै' के आलोक में ऊपर के तीनों पंक्तियों के अंग सौंदर्य और हाव-

भावों को देखने पर इस गतिशील सौंदर्य को समझा जा सकता है। सौंदर्य चित्रण में घनानंद रीतिकालीन अलंकारिक मार्ग से कुछ न कुछ ग्रहण करते हैं लेकिन उसे अपनी मौलिक प्रतिभा से अंगो की आंतरिक संवेदना के प्रभाव को अधिक लक्षित करते हैं। इसी रूप में वह अपने युगीन कवियों से अलग और विरल पहचान बनाते हैं।

घनानंद का काव्य विरह प्रधान प्रेम काव्य है। उनके काव्य में संयोग चित्रण कम, विरह का चित्र अधिक है। घनानंद के संयोग श्रृंगार में प्रिय से मिलन की, दर्शन की उत्कट अभिलाषा है। प्रेम की गहराई की अधिकता के कारण घनानंद के संयोग और वियोग में बहुत अंतर नहीं हो पाता। यहाँ संयोग में भी वियोग-सा भाव बना रहता है। वियोग मिश्रित संयोग का यह चित्रण विरल है :

''पहिले घनआनंद सींचि सुजान, कहीं बतियाँ अति प्यार पगी।

अब लाप वियोग की लाय बलाय बढ़ाय, बिसास दगानि दगी।।''

(प्रिय जो आनंद सरीखा है संयोग के क्षण में पहले आनंद की वर्षा करके, प्यार भरी बातों से मुझे भाव–विभोर कर दिया। अब वियोग में संयोग का वह आनंददायी क्षण स्मरण कर अधिक कष्ट हो रहा है। इस तरह मेरे प्रियतम ने वियोग की अग्नि में जलनें के लिए छोड़ दिया।)

घनानंद को मूलतः 'प्रेम के पीर' का कवि कहा गया है। उनकी कथनी करनी में फर्क नहीं है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल घनानंद के वियोग चित्रण की गंभीरता का विवेचन करते हुए लिखते हैं, ''यद्यपि इन्होंने संयोग और वियोग दोनों को लिया है पर वियोग की अंतर्दशाओं की ओर ही दृष्टि अधिक है। इसी से अनेक वियोग संबंधी पद ही प्रसिद्ध है। वियोग वर्णन भी अधिक अंतर्वृत्ति निरूपक है, वाह्यार्थ निरूपक नहीं। घनानंद ने न तो बिहारी की तरह

विरहताप को बाहरी ताप से मापा है, न बाहरी उछलकूद दिखाई है। जो कुछ हलचल है वह भीतर की है। बाहर से यह वियोग प्रशांत और गंभीर है, न उसमें करवटें बदलना है न सेज का आग की तरह से तपना, न उछल-उछल कर भागना।'' घनानंद का प्रेम एकनिष्ठ और एकपक्षीय है। विरह की विलक्षण संवेदना। प्रेमी की पीड़ा अनिर्वचनीय है। खुद इस संवेदना को घनानंद ने 'मौन मधि पुकार' कहा है। विरह का मर्मस्पर्शी चित्रण उनके काव्य की पहचान है।

अंतर उदेग-दाह, आँखिन प्रवाह-आँसू,

देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है।

सोइबो न जागिबो हो हँसिबो न रोइबो हू,

खोय-खोय आप ही में चेटक लहनि है।

जान प्यारे प्राननि बसत पै अनँदघन,

बिरह-विषम-दसा मूक लौं कहनि है।

जीवन मरन, जीव मीच बिना बन्यौ आयि

हाय कौन बिधि रची नेही की रहनि है।।'

घनानंद विरह को उदात्त भावभूमि पर प्रतिबिंबित करते हैं। आत्मभर्त्सना है परंतु प्रिय की अमंगल कामना नहीं है। जीवन के उत्तरार्द्ध में तो उन्होंने प्रेम साधना को इश्वरीय बना दिया। इसलिए उनके यहाँ प्रेम की जाग्रत स्थिति बनी रहती है। रामचन्द्र शुक्ल घनानंद की विरह

संवेदना की उदात्तता का चित्रण करते हुए सही लिखते हैं, ''घनानंद के श्रृंगार काव्य में विरहानुभूति के चित्र संयोग चित्रों की अपेक्षा कई गुना अधिक है। घनानंद के विरह वर्णन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कवि विरह तीव्रता का चाहे जितना अनुभव करता और कराता हो 'निराशा' और 'विषाद' को वह पास फटकने नहीं देता। जिसकी दुहाई 'आलोचक प्रवर दिया करते हैं।''

शास्त्रों में विरह की दस अंतर दशाओं का वर्णन किया गया है– अभिलाषा, चिंता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि जड़ता और मरण।

घनानंद के इस शास्त्रीय विरह दशा वर्णन में भी स्वाभाविकता है। उसमें कृत्रिमता रंच मात्र नहीं है क्योंकि उनका श्रृंगार वर्णन स्वच्छंद प्रेम की घनीभूत अभिव्यक्ति का ही प्रतिरूप है। शास्त्र का वह अनुकरण नहीं करते बल्कि वह उनकी स्वच्छंद प्रेम योजना का अंग है। श्रृंगार की स्वच्छंद अभिव्यक्ति में शास्त्रीय अभिव्यक्तियाँ फूटती है, व्यक्त होती है। घनानंद अपने प्रिय को सुजान, जानराय, ढरकों ही बानिवाले नाम से पुकारते हैं। वह प्रिय की निष्ठुरता पर खीजते नहीं, दुखी नहीं होते, विरह में जीवन का रस ढूँढ़ते हैं। विरह की मनोदशा उनके लिए प्रेम की कोमल स्थिति है। तभी तो वह लौकिक से आरंभ होकर अलौकिक प्रेम में तब्दील हो जाता है। अलौकिक प्रेम की यह संवेदना उन्हें सूफी काव्य के प्रेम चेतना से जोड़ता है, जिसमें प्रेमिका को इश्वर का दर्जा दे दिया जाता है।

बोध पश्न

निम्नलिखित पश्नों के उत्तर पाँच-पाँच पंक्तियों में दीजिए।

1. घनानंद की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2. घनानंद की कविता में 'स्वच्छंद प्रेम दृष्टि' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3. घनानंद के काव्य में व्यक्त सौंदर्य-चित्रण पर प्रकाश डालिए

.....

.....

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित कथनों में सही (√) अथवा गलत (×) का चिह्न लगाकर उत्तर दीजिए।

(क) घनानंद रीतिसिद्ध धारा के कवि हैं। ( )

(क) घनानंद रीति निरूपण करने वाले कवि हैं। ( )

(क) 'वियोगबेलि' घनानंद की काव्य-कृति है। ( )

(घ) घनानंद अपने प्रेम को 'मौनमधि पुकार' कहते हैं। ( )

10.4 घनानंद के काव्य में लोक जीवन और भक्ति भावना

घनानंद के हृदय में वृंदावन का लोक समाया हुआ है। ब्रजभूमि की संस्कृति, कृष्ण की लीलाभूमि, गोकुल की लोक संस्कृति और वहाँ के जन-जन में व्याप्त प्रेम की व्याप्ति घनानंद को खूब भाई तभी तो उन्होंने 'ब्रज-व्यवहार', 'ब्रज-विलास', 'गोकुल-चरित्र', 'गोकुल-गीत', और 'गोकुल विनोद' जैसी काव्य रचनाओं में ब्रज की लोक संस्कृति की छटा बिखेरी है। 'कृष्ण-कौमुदी' में ब्रजलोक के नायक कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हैं तो 'यमुना-यश' में वह कृष्ण के नाम ब्रजवासियों की ओर से प्रेम-पत्र लिखते हैं जिसमें कृष्ण को खूब ताने देते हैं। इस रचना में लोक के प्रेम और प्रतिरोध दोनों को देखा जा सकता है। 'राधा-कृष्ण' को केंद्रित कर 'सरस बसंत' नामक ग्रंथ में उन्होंने ब्रज के लता कुंजो, यमुना और वहां के लोक में रचे-बसे प्रेम और प्रकृति की अनोखी हवा का सुंदर वर्णन किया है :

बन बसंत बरनन मन फूल्यौ

लता-लता-झूलनि संग झूल्यौ।।

खगनि चुहक, पिक-कुहक सुहाई।

बन मनमय की फिरी दुहाई।

मलय -पवन-आगम सुखसार।

रोचक महा सुदेश सुठार।।

कुंजन के प्रकार बहु भांति।

जमुना तीर बिराजति पांति।

नव पल्लव दरपन-दुति दबै।

या बन की छवि या बन फवै।।

मूलतः प्रेम के कवि हैं घनानंद, लेकिन उनकी कविता में 'भक्ति-रस' भी कम नहीं है। जीवन के अंतिम दौर में वह भक्ति रचनाओं की ओर अग्रसर हुए। दिल्ली दरबार से अपमानपूर्वक निकाले जाने और प्रेमिका सुजान द्वारा ठुकराए जाने पर उनकी कविता में विरह की तीव्र अनुभूति फूटी और फिर भक्ति की ओर उन्मुख हुए। यों ऊपरी तौर पर उनकी कविता में 'शृंगार' और 'भक्ति' एक लगते हैं लेकिन विरह शृंगार से भक्ति की ओर वे क्रमशः बढ़ते हैं। विरह की आरंभिक कविताओं में विरह से दग्ध, प्रेम में डूबे प्रेमी की करुण पुकार है। धीरे-धीरे वह भक्ति में रूपांतरित हो जाती है। सुजान को इश्वरीय दर्जा देकर वह राधा कृष्ण की तरह उनको याद करते हैं। भक्ति का यह रूप दिव्य प्रेम की अनुभूति कराने वाला है। रामदेव शुक्ल 'आनंदघन' पुस्तक में घनानंद की भक्ति के बारे में लिखते हैं, ''रीतिकाल के अन्य कवियों की तरह शृंगार और भक्ति की खिचड़ी पकाने के स्थान पर आनंदघन ने अपना प्रेम-जीवन और भक्ति जीवन अलग-अलग रखकर दोनों को पूर्णता तक पहुँचाया है। इसी प्रकार प्रेम और भक्ति संबंधी उनकी रचनाओं के संसार भी अलग-अलग हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि अपने शृंगार-भाव को आनंदघन किसी हीनता भाव या पाप बोध से नहीं जोड़ते। वे प्रकृत मनुष्य के स्तर पर उत्पन्न नैसर्गिक प्रेम को भी इश्वरीय, अलौकिक और दिव्य प्रेम का ही अंश मानते हैं।''

घनानंद की कविता का केंद्र सुजान है। अंतिम समय में वह भक्तिपरक रचनाओं में राधा-कृष्ण को आधार बनाते हैं। आलोचकों का कहना है कि घनानंद विधिवत भक्ति संप्रदाय में दीक्षित हुए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार वह निंबार्क संप्रदाय में दीक्षित हुए तो लाला

भगवानदीन का कहना है कि घनानंद सखी संप्रदाय में दीक्षित हुए। यों घनानंद भले ही किसी संप्रदाय में दीक्षित हुए हों लेकिन उनकी कविता में व्यक्त उनकी स्वच्छंद और अलमस्त प्रवृत्ति इसके विपरीत लगती है। कहा जा सकता है कि संप्रदाय में दीक्षित होते हुए भी वह अपनी कविता में उसका अनुसरण नहीं करते हैं वह उनकी भक्ति में अनुस्यूत है। सुजान द्वारा उपेक्षित किए जाने पर वह लौकिक से अलौकिक प्रेम की ओर उन्मुख हुए। राधा-कृष्ण जिस दिव्य प्रेम के समुद्र में प्रेम का अवगाहन करते हैं, यह भक्ति का वह प्रेम है जिसमें एकनिष्ठता हो, उदारता हो, आत्मसमर्पण हो। ऐसा ही प्रेम है घनानंद का भी हैः

प्रेम को महोदधि अपार हेरि है, बिचार
बापुरो हहरि वार ही तें फिरि आयौ है
ताही एक रस ह्वै बिबस अवगाहैं दोऊ,
नेहि हरि राधा जिन्हैं देखे सरसायौ है।
ताकि कोऊ तरल तरंग-संग छुट्यौ कन,
पूरि लोक लोकनि उमंगि उफनायौ है।
सोई घनआनंद सुजान लगि हेत होत,
ऐसें मथि मन पै सरूप ठहरायौ है।

वैसे तो घनानंद की संपूर्ण रचनाओं में भक्तिपरक रस व्याप्त है लेकिन कुछ रचनाएँ भक्ति की दृष्टि से प्रमुख हैं इनमें 'प्रेम-पत्रिका' और 'पदावली' प्रमुख है। 'प्रेम पत्रिका' पढ़ते ही सूर के 'भ्रमरगीत' का स्मरण हो आता है। सूर के 'भ्रमरगीत' में गोपियाँ कृष्ण के जाने के बाद कृष्ण की छवि, स्मृतियों से प्रेम करती हैं; वही हाल घनानंद का है। सुजान द्वारा उनके प्यार

को ठुकरा दिए जाने के बाद वह सुजान की स्मृति को प्यार करते हैं। अब वह ब्रजमंडल की भूमि और प्रकृति से प्रेम की अभिलाषा रखते हैं। 'पदावली' में उन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम, लीला और जीवन की मोहक क्रीड़ाओं को चित्रित किया है। राधा-कृष्ण के प्रति उनकी प्रेम भक्ति विरल है।

'वियोगबेलि' और 'इश्कलता' जैसी उनकी रचनाओं में सूफी भक्ति भाव का प्रभाव है। वैसे आत्मा पुरुष परमात्मा स्त्री का भाव तो घनानंद की कविता में मौजूद है। लेकिन घनानंद की भक्ति और प्रेम में इस सूफी भाव का अतिक्रमण भी है। वह 'इष्कमजाजी' से 'इष्कहकीकी' तक ही नहीं पहुँचते, उसके पार भी जाते हैं। वह लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम से अलग नहीं करते, बल्कि उनकी भक्ति में लौकिक-अलौकिक प्रेम और भक्ति की आवाजाही होती रहती है। वे स्वच्छंद प्रेम के गायक हैं सो उनकी भक्ति में भी स्वच्छंद भक्ति का भाव है। स्वच्छंद प्रेमी और स्वच्छंद भक्ति के राही घनानंद जीवन भर बनी-बनाई लीक को तोड़ते रहे और नई राह सृजित करते रहे तभी तो वह कहते हैं, ''लोग हैं लागि कबित्त बनावत मोंहि तो मेरे कबित्त बनावत''।

10.5 घनानंद की कविता का शिल्प पक्ष : काव्य भाषा, छंद, अलंकार

घनानंद के समय ब्रजभाषा का विकास हो चुका था। घनानंद की काव्यभाषा में छंद और अलंकारों का प्रयोग भाषा की सर्जनात्मक शक्ति बढ़ाने वाला है, वह अलंकारो से चमत्कार नहीं पैदा करना चाहते उसको समृद्ध करना चाहते हैं। भाषा की संप्रेषणीयता पर बल देने वाले घनानंद ब्रजभाषा की मिठास, वक्रता और उसकी भाव व्यंजकता का भरपूर और सफल प्रयोग करते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल घनानंद के काव्यभाषा की सामर्थ्य की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, ''इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई

कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व ही है। विप्रलंभ श्रृंगार ही अधिकतर इन्होंने लिखा है। ये वियोग श्रृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं। 'प्रेम के पीर' को लेकर ही इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीरपथिक तथा जबांदनी का दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।'' अतः इनके संबंध में निम्नलिखित पंक्ति बहुत ही संगत है :

नेही महा, ब्रजभाषा प्रवीन औ सुंदरतानि के भेद को जानै।

योग-वियोग की रीति में कोविद, भावना भेद स्वरूप को ठानै।।

चाह के रंग में भीज्यो हियो, बिछुरे मिले प्रीतम सांति न मानै

भाषा प्रवीन, सुछंद सदा रहै सो घन जू के कबित्त बखानै।।

घनानंद के समय जो ब्रजभाषा उन्हें प्राप्त हुई उसका विकास उन्होंने किया, उसमें कुछ जोड़ा, उसे समृद्ध किया। उदाहरणस्वरूप तद्भव देशज शब्द– बिसास, आंकू, सल, पैधक, बर न्यार; फारसी शब्दों में– निशान, मार, जान और हुस्न; संस्कृत शब्दों में– मीन, विध, नीर, लोचन जैसे उल्लेखनीय शब्दों का प्रयोग भाषा संबंधी उनकी प्रयोगधर्मिता का परिचय देते हैं।

घनानंद की काव्यभाषा की यह विशेषता है कि उसमें अभिधा की जगह लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ की अधिकता है। वैसे भी व्यंजना और लक्षणा से भरी भाषा को उत्तम कविता कहा जाता है। घनानंद की कविता में व्यंजना से अधिक लक्षणा का प्रयोग किया गया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने इतिहास ग्रंथ में घनानंद के काव्य में लक्षणा के प्रयोग की प्रशंसा करते हुए

लिखते भी हैं, ''लक्षणा का विस्तृत मैदान खुला रहने पर भी हिंदी कवियों ने उसके भीतर बहुत ही कम पैर बढ़ाया। एक घनानंद ही ऐसे कवि हुए जिन्होंने इस क्षेत्र में अच्छी दौड़ लगाई। लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य की जो हवा इनमें दिखाई पड़ी खेद है कि फिर वह पौने दो सौ वर्ष पीछे जाकर आधुनिक काल के उत्तरार्ध में अर्थात वर्तमान काल की नूतन काव्यधारा में ही, 'अभिव्यंजनावाद' के प्रभाव से कुछ विदेशी रंग लिए हुए प्रगट हुई।'' घनानंद का प्रयोग वैचित्र्य दिखाने के लिए कुछ पक्तियाँ नीचे उद्धृत की जा रही हैं :

(क) अरसानि गही वह बनि, सरसानि सो आनि निहोरत है।

मुहावरों और लाक्षणिकता के सुंदर प्रयोग से वह कविता के भाव संप्रेषण को सामर्थ्यवान बनाते हैं। उनके द्वारा रचे गये प्रसिद्ध पद की ये काव्य पंक्तियाँ इसी की गवाही दे रही हैं :

तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो कहो, मन लेहु के देहुं छटांक नहीं।।

घनानंद कविता में छंद, अलंकार का विषय के अनुरूप प्रयोग करते हैं। वह अच्छे संगीतकार थे इस कारण उनकी कविता में छंदों और अलंकारों का सटीक प्रयोग किया गया है। घनानंद के काव्य में वैसे तो कवित्त, सवैय्या, त्रिलोकी, नाटक, निसानी, शोभन और त्रिभंगी का प्रयोग मिलता है लेकिन उनके प्रिय छंदो में कवित्त और सवैय्या हैं।

कविता के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए उन्होंने शब्दालंकारों और अर्थालंकारों दोनों का प्रयोग किया है, लेकिन विरोधमूलक और साम्यमूलक अलंकारों में उनका मन अधिक रमा है। उपमा, अनुप्रास, असंगति और विरोधाभास उनके प्रिय अलंकार हैं जिनका प्रयोग बहुतायत में उनके काव्य में किया गया है।

बोध पश्न

निम्नलिखित पश्नों का उत्तर पाँच-पाँच पंक्तियों में दीजिए।

5. घनानंद के काव्य में व्यक्त भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6. घनानंद की काव्य-भाषा की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

7. घनानंद अपनी कविता में किन-किन अलंकारों और छंदों का प्रयोग करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

8. निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से कीजिए।

(क) घनानंद की काव्यभाषा ..... है। (अवधी, ब्रज, बघेली)

(ख) घनानंद 'प्रेम के .....' के कवि हैं। (पीर, उत्साह, संयोग)

(ग) घनानंद का प्रिय छंद कवित्त और ..... है। (त्रिभंगी, सवैया, त्रिलोकी)

(घ) घनानंद की कविता में शृंगार के ..... का आधिक्य है। (संयोग, करूण, वियोग)

10.6 घनानंद की कविता का वाचन और आस्वादन

- **अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।...**

संदर्भ

प्रस्तुत कविता घनानंद के द्वारा रचित है।

व्याख्या

'प्रेम के पीर' के गायक घनानंद अपने इस पद में प्रेम मार्ग की निष्छलता और कठिनाई का वर्णन करते हैं। यहाँ प्रिया अपने प्रेमी को बता रही है कि प्रेम का मार्ग सरल और सहज है उसमें निष्कपटता आवष्यक है, कपट करने वाले इस मार्ग पर नहीं चल सकते।

प्रिया अपने प्रिय को संबोधित कर कह रही है कि हे प्रिय सुनो प्रेम का स्नेह मार्ग का मार्ग सीधा-सरल है उसमें किसी सयानेपन अथवा सांसारिकता या दिखावेपन की आवष्यकता नहीं है। इस मार्ग पर वही प्रेमी जन चल सकते हैं जिन्होंने अपने अहंकार को, दंभ को, त्याग दिया है। जो कपटी है, शंकायुक्त है अर्थात निःशंक नहीं है वह इस सीधे-सरल प्रेम मार्ग पर चलते झिझकते हैं। कारण ऐसे जन टेढ़े मार्ग पर चलने के आदी होते हैं सो सरल मार्ग पर चल नहीं सकते। प्रिया अपने प्रेमी को संबोधित करते हुए कह रही है कि हे सघन, गहरा आनंद देने वाले सुख देने वाले प्रिय, तुम सब कुछ जानते तो हो लेकिन तुम्हारी कथनी-करनी में भेद है। इसलिए हे प्यारे प्रिय सुजान सुनो कि इस धीर प्रेम के मार्ग में केवल एक अंक, एक ही रास्ता है, एक ही निष्चय है, दूसरा अंक या दूसरा मार्ग नहीं है। यहाँ कोई चालाकी चल नहीं सकती। घनानंद कहते हैं कि वह मेरा प्रेमी बहुत ही चतुर है जो सबका

मन ले लेता है पर अपना कुछ भी नहीं देता। क्या आप सिर्फ लेना जानते हैं देना नहीं। हे लला अथवा प्रेम क्रीड़ा के प्रेमी तुमने कौन सी पाटी, या चतुरता का पाठ पढ़ लिया है कि दूसरे का सर्वस्व लेने के बाद अपना रंच मात्र भी देना नहीं चाहते। आपने मन तो ले लिया पर छटाँक भी नहीं दिया, यह सौदा तो ठीक नहीं। आपको तो हमने मन से हृदय से प्यार किया और आप हैं कि आप अपनी एक छटा या शोभा की एक झलक भी नहीं देना चाहते। यह तो प्रेम न हुआ।

विशेषः

(i) प्रेम मार्ग का विरल-विलक्षण चित्रण।

(ii) प्रेम में निष्कपटता का आग्रह।

(iii) 'परिवृत्ति' अलंकार। परिवृत्ति अर्थात लेन-देन।

(iv) अंतिम पंक्ति मन' और 'छटांक' में ष्लेष है। 'मन' अर्थात चालीस सेर और मन (चित्त), 'छटाँक अर्थात सेर का सोलहवाँ भाग और छटाँक में छटा का अंक या झलक की भी व्याप्ति है।

(v) भाषा माधुर्य और वक्रता से भरी ब्रजभाषा।

- **हीन भएं जलमीन अधीन, कहा कहु मो अकुलानि समानै।...**

संदर्भ

घनानंद रचनावली अंतर्गत 'सुजानहित' के इस छंद में घनानंद या आनंद घन विरही की भाव दशा का सुंदर चित्रण करते हैं। इस प्रकार के छंदों में आश्रय रूप में स्त्री या पुरूष अथवा प्रेमी या प्रेमिका को मान लिया जाय तो भी अर्थबाधित नहीं होता।

व्याख्या

विरही प्रेमी अपने विरह से जलते हुए हृदय की तुलना मछली या मीन की तड़प से करता हुआ कहता है कि लोक में, संसार में मीन को इसलिए आदर्श प्रेमी माना जाता है क्योंकि जल से बाहर निकाले जाने पर वह तड़पकर अपनी जान दे देता है, लेकिन कवि का विरहाकुल प्रेमी मन लोक की इस मान्यता को स्वीकार नहीं करता और कहता है कि प्रेम के विरह से दग्ध होकर अपनी जान दे देना मीन के प्रेम की प्रगाढ़ता को नहीं प्रदर्शित करता बल्कि उसके छिछलेपन को दिखाता है। प्राण देकर प्रेम से मुक्ति पा लेने वाला हीन प्रेमी है। जो प्रेम में विरह को सहते हुए तड़पता है, वही असली प्रेमी है, इसकी तुलना जान देने वाले प्रेमी से कहाँ की जा सकती है। जल के वियोग में अपने प्राण त्याग देने वाला मीन अपने प्रेमी (जल) पर निष्ठुर होने का कलंक लगाता है जो उचित नहीं है। जल को नीरस नेही बना देता है। विरह की हर दशा को सहन कर सकने वाला प्रेमी कहता है कि मीन जल से अलग होकर इसलिए प्राण देता है क्योंकि वह कायर है। उसके भीतर प्रणय से उपजे दुख और विरह को सहने की शक्ति नहीं है। प्रेम में आशा, विष्वास और साहस की आवष्यकता होती है जो जड़मति मीन के पास नहीं है, तभी तो वह विरह में अपनी जान तो देता ही है साथ ही प्रेमी जल के ऊपर नीरस और कठोर होने का आरोप भी लगा देता है। उसे कलंकित कर देता है। अपने प्राण का त्याग कर मीन यह प्रमाणित कर देता है कि उसे प्रीति की रीति नहीं पता है। वह खुद तो मरता ही है प्रेमी को भी कलंकित कर देता है। वियोग से घबराकर, हारकर अपने प्राण त्याग देना यह तो प्रीति की रीति न हुई। यह तो प्रीति मार्ग की अनभिज्ञता है। यहाँ पर प्रेमी अपनी विरह व्यथा की गंभीरता और उसको निरंतर सहते रहने की बात करता है और कहता है कि जो संसारी लोग मीन को ही अपने

प्रेम का आदर्श मानते हैं वह विरह की पीड़ा का अनुमान कैसे कर सकते हैं? यह स्वानुभूत का मामला है। विरह की इस असह्य किंतु दिव्य दुख की अनुभूति करने वाला प्रेमी कहता है कि मेरे मन की अंतरदशा वह प्रेमी ही समझ सकता है जो मेरे प्राणों का प्राण है, जीवन का जीवन है। प्रिय तो सब कुछ जानता है, इसलिए मेरी पीड़ा को भी जान जाएगा।

विशेष

(i) प्रेम के लोक-प्रसिद्ध आदर्श मीन के प्रेम और उसके प्राण-त्याग को घनानंद क्षुद्र और कमजोर घोषित करते हैं और प्रेम में विरह को सहते हुए जीवित रहने को प्रेम की उदात्त अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रेम का आदर्श अधिक संसारी और उदात्त है।

(ii) नीरस नेही में सभंग ष्लेष है।

- **घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ, जिहि भांतिन हौं दुख-सूल सहौं।...**

व्याख्या

प्रिया का प्रिय के विरह में सहज जिज्ञासा का भाव है। प्रिय इतना निष्ठुर है, कि उसने अपने आने का न तो निष्चित समय तय किया है और न ही भविष्य में उसके आने की संभावना ही दीख रही है। फिर भी प्रेम का भाव इतना गहरा है कि प्रिया अपने उस निष्ठुर प्रेमी का निरंतर बाट जोह रही है। ऐसा देख आम जन के मन में यही विचार आता है कि इस तरह कोई किसी से कैसे प्रेम कर सकता? अब प्रेम के इस आंतरिक भाव को प्रिया उन लोगों को कैसे बताए? अपने प्रेमी को उलाहना देते हुए कहती है कि यदि इस प्रेम के क्रिया-कलाप से प्रेमी को लगता है कि वह इस तरह अपने प्रेमी को बुलाना चाहती है तो वह निष्चित हो जाए कि आपको यहाँ (प्रेमिका के पास) आने की आवष्यकता नहीं है। यहाँ प्रेम का वह भाव

है जिसमें प्रेमिका, प्रेमी को इश्वर का दर्जा देकर उसके भक्ति में लीन हो गई है, सो ऐसे में उसके भौतिक उपस्थिति की आवष्यकता नहीं, वह तो प्रमिका के मन-मंदिर में बस गया है।

- **उर-भौन में मौन को घूँघट कै, दुरि बैठी विराजति बात बनी।...**

व्याख्या

इस छंद में मौन के अर्थ की अभिव्यंजना है। मौन की महिमा को कवि सांग रूपक द्वारा चित्रित करता है। बात रूपी वधू हृदय के मनोरम भवन में मौन का घूँघट किए उपस्थित है, वह प्रेम की अनुभूति, भक्ति और रहस्य की अनुभूति या काव्य की मार्मिक अनुभूति कुछ भी हो सकती है। अनुभूति चाहे कविता की हो अथवा प्रेम की वह वास्तविकता में मौन में ही विराजती है, हृदय की गहराई में बाहर तो उसका आभास होता है। तभी तो घनानंद ने प्रेम को 'मौन मधि पुकार' कहा है।

- **मीत सुजान अनीत करौ जिन, हाहा न हूजियै मोहि अमोहि।...**

विरहिणी प्रिय को उलाहना दे रही है। प्रिय पहले मोहित करता है, फिर निर्मोही बनकर विष्वासघात करता है। जीवन का संचार जगाकर, आनंद के बादल बनकर छा जाते हो और फिर बिना जल के प्यासे रखकर तड़प पैदा कर देते हो।

- **तब तौ छवि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन, जात जरे।...**

व्याख्या

विरह की असहनीय पीड़ा झेलते हुए विरहिणी प्रिया संयोग के क्षणों को याद करती है और अनुभूति करती है कि संयोग के क्षणों का पल जितना प्रगाढ़ होता है वियोग का क्षण उतना ही प्रतिकूल और असहनीय हो जाता है। संयोग में प्रेम करते समय प्रेमी युगल को हार पहाड़

की तरह लगते थे अब वियोग का पल पहाड़ जैसा हो गया है जिसको पार कर पाना मुष्किल हो गया है।

10.7 सारांश

- घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। वह स्वानुभूति प्रेम के स्वच्छंद भाव के कवि हैं।
- घनानंद का श्रृंगार और प्रेमवर्णन रीति की बँधी-बँधाई परिपाटी से अलग जीवन से निःसृत संवदेना है।
- घनानंद के प्रेम की प्रेरणा 'सुजान' हैं।
- इनकी कविता में संयोग का अवसर कम है, वियोग की, विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति की अधिकता है।
- स्वानुभूति प्रेम की इस गहन प्रेम अभिव्यक्ति को लक्षित करके आचार्य शुक्ल ने घनानंद के प्रेम को 'स्वच्छंद प्रेम' कहा है।
- सुजान से अलग होकर घनानंद के विरह की कविता में अलौकिक तत्व समाहित हो जाने से भक्ति की संवेदना की व्याप्ति है।
- घनानंद के यहाँ भक्ति तो इसी विरह का सोपान है, जहाँ लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की यात्रा है।
- घनानंद पूर्णतया प्रेम के स्वचछंद भाव के कवि हैं। उनके इस प्रेम-दृष्टि में सूफी कविता का प्रभाव है, ब्रजभाषा की काव्य परंपरा का भी प्रभाव है लेकिन घनानंद की कविता का

केंद्र उनकी स्वानुभूति से जुड़ा है, जो बेहद मौलिक है, निजी है, प्रेम में विरह की विरल अनुभूति है।

- ब्रजभाषा का विकसित और निखरा रूप घनानंद की कविता की विशेषता है।
- कवित्त और सवैय्या उनके प्रिय छंद हैं।
- शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का प्रयोग घनानंद की कविता की शान हैं।
- घनानंद को हिंदी काव्य-संस्कृति के स्वच्छंद भाव का प्रथम कवि कहा जाय तो गलत न होगा।

10.8 शब्दावली

सूधो – सीधा, सरल,

बाँक – सुंदर, तिरछा,

नीके – सुंदर, अच्छा,

ललित – मनोहर

सयानप – यानापन, प्रौढ़ता

आपनपौ – अपनापन।

रसीली – रस भरी, सुखदायी

10.9 उपयोगी पुस्तकें

- *घनानंद का काव्य* – रामदेव शुक्ल; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- *अनंदघन*– रामदेव शुक्ल; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

- *घनानंद और स्वच्छंद काव्य धारा* – मनोहरलाल गौड़; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- *हिंदी साहित्य का इतिहास* – आचार्य रामचंद्र शुक्ल; नागरी प्रचारिणी सभा
- *हिंदी साहित्य का अतीत भाग : 2* – विष्वनाथ प्रसाद मिश्र; वाणी प्रकाशन, दिल्ली

10.10 बोध पश्नों के उत्तर

1. देखिए – भाग 10.2

2. देखिए – भाग 10.3

3. देखिए – भाग 10.3

4. (क) ×

(ख) ×

(ग) ✓

(घ) ✓

5. देखिए – भाग 10.4

6. देखिए – भाग 10.5

7. देखिए – भाग 10.5

8. (क) ब्रज

(ख) पीर

(ग) सवैया

(घ) वियोग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY